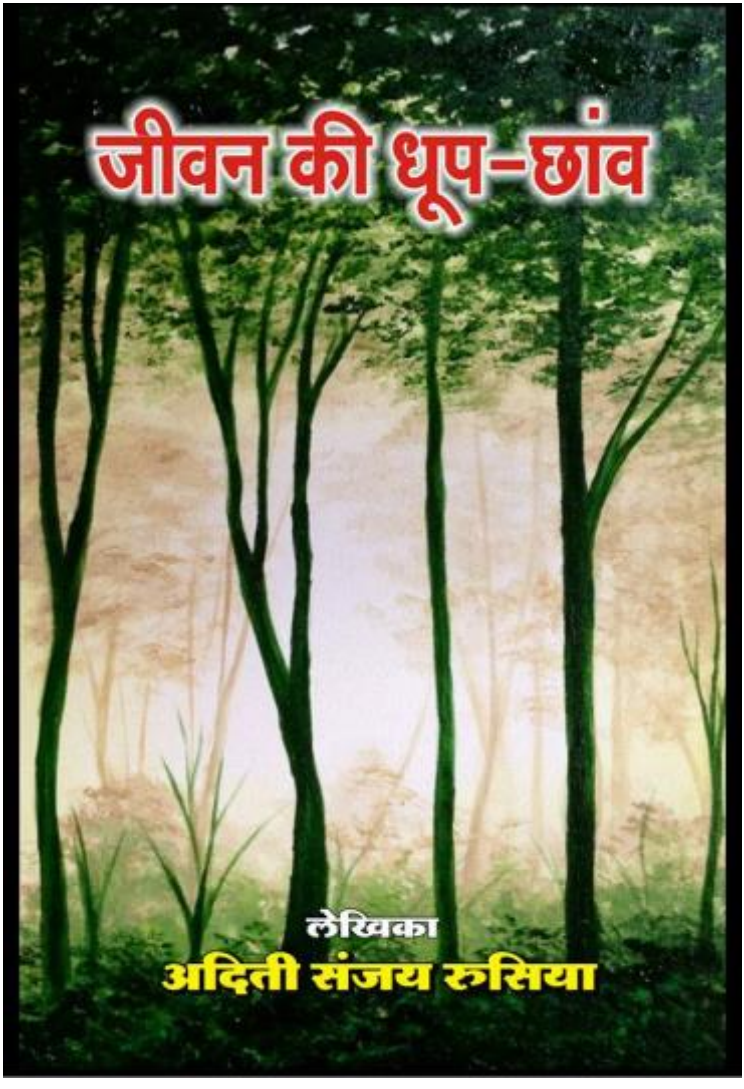
जीवन की धूप-छांव
लेखिका
अदिती संजय रुसिया

''पच्चीस बरस''

रिमझिम सी तेरे प्यार की
फुहार में भींगते
जाने कब पच्चीस बरस
गए मेरे बीत
उमड़ते-घुमड़ते
बादलों में
उलझते-सुलझते
कुछ अनकहे सवालों में
कुछ रिश्तों को बनाने में
कुछ खुदको संभालने में
बच्चों के परवरिश में
हर शाम तुम्हारे इंतजार में
रिमझिम सी तेरे प्यार की
फुहार में
जाने कब पच्चीस बरस
गए मेरे बीत...

''जीवन की धूप-छांव''

लेखिका
अदिती संजय रुसिया

सम्पादक
प्रीति समकित सुराना

''जीवन की धूप-छांव''

प्रेरणा
अंतरा-शब्दशक्ति

आवरण चित्र संयोजन
प्रीति समकित सुराना

डिजाईनिंग एवं प्रिंटिंग
शैलू कम्प्यूटर
बस स्टैण्ड, वारासिवनी (म.प्र.)
मो. 94258-92482
E-mail : rajeshpatle11@gmail.com

''लेखिका की कलम से''

नाम	: अदिति रुसिया	माता	: श्रीमती मंजुला गुप्ता
जन्म	: 16/04/1972	पिता	: स्व. श्री सतीश चन्द गुप्ता
जन्मस्थान	: जबलपुर	पति	: श्री संजय रुसिया
शिक्षा	: बी.ए.	बेटा	: कार्तिक रुसिया
कार्यक्षेत्र	: गृहणी	बेटी	: कावेरी रुसिया

सामाजिक क्षेत्र –अपनी संस्था ''पहला कदम'' के माध्यम से गरीब व अनाथ बच्चों की सेवा।
लेखन का उद्देश्य – अपने मनोविचारों को लोगो तक पहुंचाना।
लेखन की प्रेरणा – परिवेश, परिवार और अंतरा परिवार।

बरस पैंतालीस की हुई
जब माह था अप्रैल वो
कहा सखी प्रीति ने मुझसे
जोड़ती हूँ अंतरा से तुझको
जोड़ दिया फिर उसने मुझको
डरते डरते कलम उठाली हाथ में मैंने
चल पड़ी नई राह में
प्रथम लिखा जो गदय मैंने
दिन गुरुवार बेटे के वो नाम था
हौसला दिया ब्रजेश जी और मनोज जी ने
मुझे लगा हाँ मै भी लिख सकती हूँ
पापा नहीं पर आशीर्वाद उनका साथ था
माँ ने भरी एक नई उमंग
और हमसफ़र का हाथो में हाथ था
बच्चों ने भी दिया हौसला
प्रीति का भी साथ था
होने वाले है पच्चीस बरस
अब कुछ महीनों में शादी के
एक नए रुप में हुआ
मेरे पैंतालीसवे बरस का आगाज था
हसरतें थी जो अधूरी
दिल की मुराद आज हुई है पूरी
तहेदिल से शुक्रिया करती हूँ मैं
प्रीति, ब्रजेश जी और मनोज जी का
शुक्रिया, शुक्रिया, शुक्रिया...

''शुभकामनाएँ बढ़ते कदमों की''

अदिती संजय रुसिया वो नाम जो मेरे शादी के उन्नीस सालों में पहले परिचय से मित्रता और मित्रता से प्रगाढ़ता तक कैसे पहुँचा मैं खुद नहीं जानती और अपनी इस प्यारी सखी को जब अंतरा परिवार से जोड़ा तब मेरे खुद के सपने अधर में लटके थे। एक-एक दिन विषयों पर शब्दों की कारीगरी रचते-रचते जिस दिन 'अंतरा-शब्दशक्ति ' मासिक वेब पत्रिका का लोकार्पण हुआ। (1 जुलाई 2017) उसके दो ही दिन बाद मित्रता का एक दायित्व और मिला, वो था संजय भैया, कार्तिक और कावेरी का एक सपना कि अदिती भाभी की कुछ रचनाओं को एक छोटी सी किताब का रुप देकर उनके विवाह के पच्चीसवें वर्षगाँठ पर उन्हें सरप्राईज़ के तौर पर देने चाहते है।

यहाँ से शुरु हुआ एक सम्पादक और एक मित्र का मिला जुला काम। उनकी अधिकतर रचनाएँ अंतरा में थी। उनमें से ही कुछ रचनाएँ ढूँढ निकाली और एक संकलन तैयार किया और उसका नाम रखा 'जिंदगी की धूप-छांव'। एक रचनाकार इससे बड़ा कोई उपहार हो ही नहीं सकता।

मात्र चार दिन में तैयार की गई इस किताब में त्रुटियां सम्भावित है पर रचनाकार की मौलिक रचना ये प्रस्तुत की गई हो। एक रचनाकार के नजरियें से अदिती जी को यह कहना चाहूँगी कि भावपक्ष बहुत ही सुदृढ़ है। लेकिन शब्द और शिल्प में कसावट बाकी है। मैंने जितना आपको पढ़ा है यही समझा आपकी गद्य रचनाओं में कसावट कविताओं से अधिक है लेकिन मुझे पूरा विश्वास है जैसे-जैसे लेखन आगे बढ़ेगा समय के साथ निखार आते जायेगा। अभी तो यह शुरुआत है।

पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर ढेर सारी बधाई एवं शुभकामनाएँ और साथ ही ये दुआ कि वैवाहिक जीवन की तरह ही आपका साहित्यिक जीवन भी सफल एवं सतत् प्रगतिशील रहें...

प्रीति समकित सुराना
संस्थापक एवं सम्पादक
antrashabdshakt.com
वारासिवनी (म.प्र.)

''अनुक्रमणिका''

क्रमांक	विवरण	पृष्ठ क्रमांक
01	लेखिका की कलम से	03
02	शुभकामनाएँ बढ़ते कदमों की	04
03	अनुक्रमाणिका	05
04	अनुक्रमाणिका	06
05	पिया तेरा साथ	07
06	माँ	08
07	पापा	09
08	नया मुकाम	10
09	ज़िद	11
10	लाठी तेरी मैं बनूँगी	12
11	दिल की गहराई	13
12	भोर	14
13	परिंदे	15
14	पंक्षी	16
15	सीख लिया है	17
16	सुख	18
17	मै उदास हूँ	19

''अनुक्रमणिका''

क्रमांक	कविता	पृष्ठ क्रमांक
18	उलझन	20
19	ये कैसी उलझन है	21
20	सागर	22
21	परेशानी	23
22	प्रकृति	24
23	दास्तान	25
24	कांटे	26
25	अश्क	27
26	आसमान	28
27	गगन	29
28	कभी कहा था तुमने	30
29	बेबसी	31
30	विवशता	32
31	नाराज़गी	33
32	वृंदावन का कृष्ण कन्हाई	34
33	हमारी शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ	35-36

''पिया तेरा साथ''

जीवन में पिया तेरे साथ रहे
हाथो में पिया तेरा हाथ रहे
निभाएँगे सात फेरो के सातों वचन
खाई हमने जो मिलकर ये कसम
धर्म पहला हमारा सेवा माता-पिता की
मिल करेंगे सेवा उनकी हम
उन्हे देंगे खुशियाँ सारे जहाँ की हम
जीवन.....
धर्म दूजा हमारा गो रक्षा करना
मिल करेंगे रक्षा उनकी हम
उन्हे मारने न देंगे ये खाते कसम
जीवन.....
धर्म तीजा हमारा वृक्षों को बचाना
मिल करेंगे रक्षा वृक्षों की हम
उन्हे काटने न देंगे किसी को हम
जीवन.....
धर्म चौथा हमारा बेटी को बचाना
मिल करेंगे रक्षा हर बेटी की हम
उन्हे कोख में मारने न देंगे हम
जीवन.....
धर्म पाँचवा हमारा सबको साक्षर बनाना
मिल साक्षर सबको बनाएँगे हम
उन्हे देश में रहने न अब देंगे खाते क़सम
जीवन.....
धर्म छठा हमारा आतंक मिटाना
मिल आतंकियों को बाहर भगाएँगे हम
उन्हें देश में रहने न अब देंगे खाते क़सम
जीवन.....
धर्म सातवाँ हमारा मातृभाषा को बचाना
मिलकर हिंदी का प्रचार प्रसार करेंगे हम
हम खाते क़सम अंग्रेजी को खदेड़ बाहर करेंगे हम
जीवन.....

''माँ''

इस शब्द में
न जाने ऐसा क्या है
कि माँ कहते ही
सारे दुःख दर्द मिट जाते हैं...

माँ
शब्द कितना गरिमामय है
न जाने अपने दिल में
कितने दुःख दर्द छिपाए बैठी रहती
कभी न अपने मुख से कुछ कहती है...

माँ
कितना अच्छा लगता है ये शब्द
जिसमें कितनी मिठास
और
कितना प्यार भरा हुआ हैं...

माँ
ममता की मूरत प्यार की देखी है
जिसे बच्चे नदानी में न जाने क्या-क्या कह जाते
पर ना जाने क्यों आकर
फिर वो भर लेती हमें आगोश में...

माँ
हर बुरे वक़्त में बन जाती सुरक्षा कवच हमारा
माँ में न जाने ऐसा क्या है
जो कभी शब्दों में सिमट ही नहीं पाता,
माँ तो बस माँ है... माँ में मेरा जहां है...

"पापा"

पापा आज आप नहीं
तो क्या हुआ
याद आता बचपन में जो
खूब दिखाया खेल तमाशा
पापा.............

ऊँगली पकड़ चलना सिखाया
बंदर, हाथी घोड़ा बन हमको खूब हँसाया
कभी खेले साथ मिल पत्ते तो
कभी कोड़ियों से भी हमने दाँव खूब लगाया
पापा.............

जब पढ़ाई की आती बारी
खेल खेल में सब समझाया
माँ ने तो घर के काम सिखाए
दुनिया से लड़ना तो आपने है सिखाया
पापा.............

पापा आप ताकत हो मेरी
यादों में बसे शक्ति का संचार करते
मिलता बल आपके स्मरण मात्र से सदा
तभी तो जिंदगी की हर मुश्किल को
खेल समझ पार कर जाती सदा
पापा.............

''नया मुकाम''

बेटी जब बड़ी होती है
मन में उठते कई सवाल है

दिनभर तितली सी अँगना में फिरती
घर में सबकी डॉट खाती फिरती

दिन भर करती रही शैतानियाँ
दूजे घर की कैसे निभाएगी जिम्मेदारियाँ

हासिल क्या कर पाएगी ये ससुराल में
व्यर्थ की चिंता सताती माँ के मन में

पर जब बेटी को मिलता मान सम्मान है
तब होता माँ को भी अभिमान है

दो कुलों की लाज रखती है बेटी
हासिल करती है अपना एक नया मुकाम

बेटी जब.....

''ज़िद''

सुनो।
मैं न कहती थी आज "बारिश" होगी
पर तुम नहीं माने, मानते भी क्यों
इतने जिद्दी जो हो
सिर्फ अपनी ज़िद में आप हार मानते भी कैसे
आपका पुरुषत्व हमेशा आड़े आता है
जब हमारा अहम टकराता है एक दूजे से
तब भी "बारिश" होती है
चाहे प्यार की हो या तकरार की हो
मेरी आंखे तो हर बात में बरसती है
मैं जब भान लेती हूँ, तभी तो बोलती हूँ
आज तो बारिश होके रहेगी
आज न थमेगा ये तूफान
बरसती आँखो से कहर ढा जाएगी
कभी तो ज़िद छोड़ मान भी लिया करो मेरी बातें
कभी अहम त्याग समर्पित तो होकर देखो
मैंने तो समर्पण कर दिया निभाए हर वादे
ज़रा तुम भी समर्पण कर देखो
थम जाएगा अपने आप ये तूफान
समर्पण में है ताक़त इतनी
थम जाएगा बरसती आंखो से पानी
सच हो जाएगी तुम्हारी बात
ना होगी आज ये बारिश.....

''लाठी तेरी मैं बनूँगी''

जब मैं गर्भ में आई तब तुझे
माँ बनने का एहसास हुआ
फिर क्यों माँ तूने एक भ्रूण परीक्षण से
है मेरा त्याग किया
क्यों सुनी तूने दादा-दादी की
क्यों न ले पाई स्वयं ये निर्णय
मुझे बचाने का, जग में लाने का
पापा तुम भी क्यों चुप खड़े देखते रहे
क्यो न रोक पाए तुम भी माँ को
मैं रोती हूँ पर आँसू भी न दिखते किसी को
क्योंकि
अभी तो मै अंश मात्र हूँ माँ का
काया अभी बनी-बनी नहीं है मेरी
पापा आगे आओ रोको माँ को
आने दो मुझे इस संसार में
एक बेटे की ख़ातिर न लो जान मेरी
तुमने जिससे जन्म लिया वो
दादी भी एक बेटी है
फिर मुझे दुनिया में
आने से क्यों रोक रहे प्यारे पापा

मैं इस काबिल बन दिखाऊँगी
नाम करूँगी आपका रोशन एक दिन
बेटे से भी ज्यादा करूँगी ऊँचा नाम
बनूँगी तेरी बगिया का फूल मैं
महकाऊँगी तेरा सारा घर आँगन
तितली बन इधर उधर डोलूँगी
किलकारी से सबका मन मोह लूँगी मैं
तुम ज़रा भी चिंतित न होना माँ मेरी ख़ातिर
मैं रखूँगी तेरी लाज सदा
मैं इतनी काबिल बन दिखाऊँगी
होगा गर्व तुझे भी एक दिन मुझ पर
पछताना न पड़ेगा तुझे कभी मेरे
जन्म लेने से सर सदा उठा तू
चलेगी मेरे ही जन्म लेने से ये
वादा हूँ मैं करती माँ सर न झुकने
दूँगी मैं जन्म तो लेने दे मुझको
ख़ुशियों से भर दूँगी घर आँगन को
काँटा नहीं गुलाब बन महकाऊँगी
सारे घर आँगन को जन्म तो लेने दे मुझे
बोझ न बनूँगी तेरा सहारा ही बनूँगी
पहले तू उँगली पकड़ मुझे चलाना
बाद में लाठी तेरी मैं तेरी बनूँगी...

''दिल की गहराई''

प्यार हो तुम मेरा
चाहती हूँ दिल की गहराई से ज़्यादा तुम्हे,
कभी उतर कर देखो
सिर्फ़ तुम ही तुम नज़र आओगे मुझमें,
तुम्हे तो सिर्फ़ मेरा प्यार ही दिखाई दिया
उसमें छुपा दर्द नहीं,
वो दर्द जो अक्सर दे जाते तुम मुझे
अनजाने में ही सही,
क्यों न जान पाए तुम
मेरी मुस्कुराहट के पीछे के दर्द को,
ये शिकायत नहीं है
मैं तो सिर्फ़ जानती हूँ प्यार करना तुमसे,
फिर भी एक टीस सी उठती है मन में मेरे
लगती मन को ठेस है, क्यों न समझ पाते तुम
मेरी अनकही बातें
दे जाते हो बस गहरी सी चोट,
खैर जिंदगी मिली है जीने के लिए
कट जाएगी रोते-हँसते, प्यार जो करती हूँ
तुमसे मेरी जिंदगी हो तुम.....

''भोर''

भोर की पहली किरण के साथ ही
उठ जाता
सारा जग है

चिड़ियों की चहचहाहट
पक्षियों का कलरव
होने लगता तब है

काँधे पर
हल रख किसान
खेतों में जाता तब है

कान्हा की बंशी
सुन गोप ग्वाल सब
सुध बुध खोते तब है

माँ भी बिस्तर तज
लगजाति घर के
कामों मे तब है

भोर की पहली
किरण के साथ ही
उठ जाता सारा जग है.....

''परिंदे''

वो भी क्या बचपन के दिन थे
फिरते थे आज़ाद परिंदों से
न किसी काम की चिंता
न किसी कोई बोझ सर पर
अपनी ही मस्ती में मस्त
सखी सहेलियों संग खेले
अजब अजब से खेल हम
खेलते-खाते मस्ती में गुनगुनाते
नदी की अविरल धारा सा बहता
बचपन जाने कब बीत गया
वो भी............

बस शेष बची है बचपन कि यादें
वो दादी नानी की कहानियाँ
वो सखी सहेलियां संग बिताए दिन
स्कूल की बाबा जी की कचोरियाँ
माँ पापा की डाँट
और
दादी नानी का दुलार
उनके संग बिताए दिन
समय के परिंदे तो उड़ गए छोड़
गए बाद सुनहरी यादें हमारे लिए
वो भी...................

''पंक्षी''

अपने मन रुपी पंछी का क्या करूँ
रहता हर वक़्त खुले आसमों में
उड़ने को बेकरार है
हर वक़्त तुमसे मिलन की आस लिए
फिरता यहाँ वहाँ है क्यों
कुछ बोल न पाता
तुमसे मन ही मन में घुट कर
जाँ देने को बेक़रार है
लाख समझाया मन को
पर वो तो मिलन की आस लिए
उड़ने को बेक़रार है
उसे आस है तुमसे सिर्फ़
एक पल ही मिलने की
एक आस है चन्द बातें करने की
बस यही आस लिए
उड़ना चाहता खुले आसमाँ वो
मेरा मन रुपी पंछी.........

''सीख लिया है''

हाँ सीख लिया है मैंने
अपने कष्ट भरी ज़िंदगी में भी सुख से रहना...

हाँ सीख लिया है मैंने
अपने दुःख में एक पल खुशी का चुराना...

हाँ सीख लिया है मैंने
अपने ग़म में भी मुस्कुराना...

हाँ सीख लिया है मैंने
हर पल को ख़ुशगवार बनाना...

हाँ सीख लिया है मैंने
ज़िंदगी को ज़िंदादिली से जीना...

हाँ सीख लिया है मैंने
अपनों की ख़ुशी में ख़ुश रहना...

हाँ सीखूँ भी क्यों न थक गई हूँ
अब मैं अपनी इस उतार चढ़ाव की ज़िंदगी से...

हाँ थक जो गई हूँ
अपनी बीमारियों से लड़ते लड़ते...

हाँ सिखाना हो होगा
ख़ुश रहना और ख़ुशियाँ बाँटना
हँसते मुस्कुराते हुए जीना...

''सुख''

सुख क्या है?
इसकी कोई परिभाषा नहीं

क्योंकि हम चाहे तो हर
छोटे से छोटे पल को ख़ुशियाँ
से भर सकते है हर गम में
अपना सुख ढूँढ सकते है
ये जीवन का वो छोटा सा
एक पल है जिस पल में

हम सारे जहाँ की ख़ुशियाँ
अपने आँचल में समेट लेते है
उस एक पल के लिए हम
अपनी सारी दुःख तकलीफ
भूल कर सिर्फ उस पल को
जीवंत बनाने में लग जाते है

''मै उदास हूँ''

हाँ मैं उदास हूँ
बहुत उदास हूँ
बच्चे जो चले गए
घर से मीलों दूर
रह गए अकेले हम दोनों
न उनके खाने का ठिकाना
न ही सोने का ठिकाना
एक अपनी पढ़ाई में मस्त
तो दूसरा अपनी नौकरी में मस्त
और यहाँ हम उनके लिए चिंतित
क्योंकि बच्चे जब ज़्यादा दिनों
तक साथ रह कर जाते है
तो उनका जाना बहतु खलता है
वो तो अपनी दुनिया में रम जाते है
रह जाते है तो हम अकेले उदास
उनके अगली बार आने के इंतज़ार में..

"उलझन"

मैं अपनी ही उलझनों में
कुछ इस तरह उलझी
की समझ ही नहीं आया
ये वक्त कब मेरे हाथ से
रेत की तरह फिसलता रहा
कभी परिवार तो कभी
बच्चों में ही उलझ कर रह गई
बस उन्हीं में
कभी अपने लिए समय
ही नहीं निकाल पाई
अब जब सोचती हूँ तो
लगता है क्या अच्छा
न होता अगर
कुछ वक्त खुद को दिया होता
पर अब सोचती हूँ क्यों न
जो थोड़ा वक्त बचा है
उसे फिर एक नई उमंग
एक नई तरंग के साथ
अपने हमसफर के साथ
हँसते गुनगुनाते बिताया जाए
जो बीत गया वो वक्त
वापस तो नहीं आ सकता
पर जो वक्त है उसे तो
उलझनों को परे रख
एक नई शुरुवात कर
एक नए अन्दाज से
जिया जा सकता है...

''ये कैसी उलझन है''

ये कैसी उलझन है
जो सुलझाई न जाए
जो सुलझाने से
और भी उलझा जाए

अगर बोलूँ माँ से मैं
तो वो ही रूठ जाए
अगर बोलूँ बीबी से मैं
तो वो मुझे धमकाए
करूँ तो क्या करूँ मैं
समझ मेरे न आए
पिसूँ मैं दो पाटों में
बोल न कुछ पाऊँ मैं

माँ कहे अपनी बीबी से
बोलो मैं तो हूँ माँ तेरी
बीबी कहे अब तो
माँ का पल्लू छोड़ो
मैं हूँ तो तेरी पत्नी
ब्याह के लाए तुम हो
निभाओ अब तुम वो
किए वादे जो तुमने

ये कैसी उलझन है
जो सुलझाई न जाए
जो सुलझाओ तो
और भी उलझा जाए...

''सागर''

सुनो !
तुम इतने अच्छे क्यों हो
क्यों करते हो इतना प्यार सबसे
कभी नाराज़ नहीं होते हो किसी पे
चाहे कितनी भी कठिन परिस्थिति हो
हँसते मुस्कुराते प्यार लुटाते फिरते हो
जैसे सागर कभी किसी से कुछ लेता नहीं
सदा कुछ न कुछ देता ही रहता है

बस!
तुम भी उसी सागर की तरह हो
हमेशा देना ही तो सीखा है
समंदर सा विशाल हृदय लिए तुम फिरते हो
किसी की बात का कभी बुरा ही नहीं मानते
इतनी शक्ति कहा से लाते हो
चाहे कोई लाख बुरा करे तुम्हारा
पर तुम सारे रिश्तों को अपने अंदर समेटे फिरते हो

शायद!
इसीलिए हर कोई तुम्हारे जैसा बनना चाहता है
पर इतना आँसा कहाँ तुम्हारी तरह बन पाना
क्योंकि तुम तुम ही हो
जैसे समंदर का कोई कुछ नहीं कर सकता
वैसे ही तुम भी अपने प्यार की अविरल धारा
सदा बहाते ही रहोंगे
प्यार लुटाते ही रहोंगे...

''परेशानी''

याद है मुझे आज भी वो दिन
चाहते हुए भी मैं उन दिनों
को नहीं भुला पती
जब असाध्य दर्द सहती
तड़पती बिस्तर पर पड़ी
तुम्हारा वो मेरा ध्यान रखना
अपनी परेशानियों को छिपाते हुए
चेहते पर शिकन भी न आने देना
और निरंतर यही प्रयास करना
कि मैं हर वक़्त ख़ुश रहूँ
उस वक़्त बच्चों की नाज़ुक उम्र
इतनी परेशानियों के बीच उन्हें भी
क्या ख़ूब सम्भाला
वो आप ही है जिन्होंने
मुझे नया जीवन दिया
आज मैं अपने पैरों पर खड़ी हूँ
तो सिर्फ़ आपके के कारण
क्योंकि
उस वक़्त अगर आप हार जाते
तो शायद आज मैं भी न होती
आप का साथ
और बच्चों के प्यार की वजह से ही
मुझे उस कष्ट को सहने की शक्ति मिली
वो कष्टप्रद दो साल का समय
कुछ रोते, मुस्कुराते
परेशानियों से जूझते हुए
कब बीत गया
समझ ही नहीं आया
क्योंकि
तुमने अपनी परेशानियाँ किसी पें
जाहिर ही नहीं होने दी
बस दर्द को सीन में छुपाए जीते रहे
और मुझमें
जीने की शक्ति का संचार करते रहें...

''प्रकृति''

हम सब प्रकृति की गोद में पले बड़े है
और आज हम उसी प्रकृति को हानि भी पहुँचा रहे है
क्या एक बार भी सोचा हमने
उन बंजर होती जमीनो को
दुबारा उपजाऊ बनाने के विषय में
नहीं, क्यों नहीं सोचा
क्योंकि
आज हम अपनी आधुनिक जीवन शैली में
इतने रम गए कि
आज हमारे पास अपने लिए ही वक़्त नहीं रह गया है
पहले हम शाम को मैदानों और बगीचों में खेला करते थे
जहाँ सिर्फ़ हरियाली ही हुआ करती थी
आज उसकी जगह वैज्ञानिक उपकरणों ने ले ली
आज का बच्चा सिर्फ टी.वी., लेप-टॉप
और मोबाईल में ही लगा रहता है
उसके पास इतना वक़्त ही नहीं होता
ना ही उनके माता-पिता के पास
आज सब आधुनिकता की दौड़ में लगे है
प्रकृति का आनंद लेना तो जैसे भूल ही गए
वो भी क्या दिन हुआ करते थे
सावन में पेड़ों पर झूले पड़ा करते थे
चारों ओर हरियाली ही हरियाली हुआ करती थी
पर आज जगह-जगह सिर्फ़
ऊँची-ऊँची इमारतें ही नज़र आती है
दूर तक कही पेड़ो की एक टहनी भी नज़र नहीं आती
आधुनिकता की दौड़ में इतना भी ना भाग मानव
कि जब तू दुनिया से जाए
तो तुझे एक लकड़ी भी नसीब ना हो
कि तुझे एक लकड़ी भी नसीब ना हो....

''दास्तान''

ये दास्तान है हर उस बेटी की
जो दहेज के लिए रोज़ प्रताड़ित की जाती हैं
आँसू तो बहाती है पर कह कुछ ना पाती है
रोती है, तड़पती है, सहती हर जुल्म है
पर कुछ न कर पाती है
बंद कमरे में सिसकियाँ लेती
कोने पड़ी आँसू तो बहाती है
विवशता तो देखो उसकी माँ-बाप से कह न कुछ पाती है
चुपचाप जुल्म सहती रहती
डरी सहमी सी है वो रहती
डरती है वो दुनियाँ वालों के तानों से
सोचती है क्या कहेंगे लोग उसे
ग़र उसने उठाया कोई क़दम खिलाफ़ उनके
मैं तो कहती हूँ हर बेटी से
तू दुर्गा और चण्डी बन कर सामना उनका
तुझमें है ताक़त बहुत, है तू शक्तिशाली
कर न पाएगा कोई तेरा कुछ
बिगड़ ना पाएगा तेरा कुछ
हारना न तू कभी डगमगाना ना तू कभी
ऐसे मक्कारों, बेईमानों से बनकर झाँसी की रानी
करना तू सामना, न बहाना आँसू कभी
करना न परवाह समाज के ठेकेदारों की
क्योंकि देंगे कभी न ये तेरा साथ
न आऐंगे कभी काम ये
बातें और वादे तो करते सभी
न देता साथ कोई कभी इसलिए
कहती हूँ मैं अपने देश की बेटियों से
चण्डी बनो छेड़ दो तुम जंग अब खाओं कसम मरने न देंगे कोई बेटी
इस देश की दहेज के कारण अब बहा ना पाए कोई आँसू
प्रताड़ित होकर अब...

''कांटे''

सुनो!
काँटो से दोस्ती करोंगे तो फ़ायदा ही होगा
क्योंकि काँटे आपको हर वक़्त एहसास कराते रहेंगे कि
जीवन में सुख है तो दुःख भी है...
अच्छे दोस्त है तो दुश्मन भी...
जिसने काँटों से दोस्ती की
वो सबसे ज्यादा सुखी
क्योंकि! कामयाबी ऐसे ही नहीं मिलती साहब,
काँटों भरी राह पर चलना पड़ता हैं
तब जा कर मंज़िल मिलती है
क्योंकि!
कामयाब होते व्यक्ति की राह में
काँटे ही तो बिछाए जाते है
लोगों को दूसरों की कामयाबी बर्दाश्त नहीं होती
फिर कही न कही राह में रोड़े अटकाते हैं...
जो सिर्फ़ फूलों से दोस्ती करते है
उन्हें मुश्किलों का सामना करना पड़ता है
पर जिसने स्वयं काँटों भरी राह चुन ली हो
उसकी राह में कोई लाख काँटे बिछाए
वो तो उसे भी फूल समझ आराम से
कँटीली राह को पार कर जाता है
इसीलिए जिसने काँटो से भरा जीवन जिया है
काँटो से दोस्ती की है
शायद वो आज ज़्यादा सुखी है
बनिस्बत उसके जिसने फूलों से दोस्ती की है
क्योंकि गुलाब भी तो काँटों में ही खिलता हैं
और किसी मेहरुन्निसा के सिर का ताज बनता है ...

''अश्क''

दर्द न देंगे कभी
ये तो कहते हो मुझे तुम
पर सोचा कभी
मौन रहकर भी
दर्द कितना देते हो मुझे तुम
अश्क़ न आने देंगे
तेरे आँखों में सनम हम
कहते हो मुझे तुम
पर न चाहते हुए भी
कुछ दर्द ऐसे दे जाते हो मुझे तुम
प्यार तो टूटकर करते हो मुझे
पर ये सितम न चाहते हुए भी
जाने क्यों कर जाते हो तुम
कुछ अनकहे दर्द दे जाते मुझे तुम...

''आसमान''

जब नन्ही सी बेटी आई
मेरे अंगना थी लगा मुझे तब मानो जैसे
आसमान से कोई परी उतर घर मरे आई हो
छम छम करती पूरे घर अँगना
जब वो मँडराती थी
लगता जैसे आसमान से परी उतर घर आई थी
धीरे-धरी बड़ी हुई वो
सपने उसके आसमा से ऊँचे पड़ने में
है बड़ी तेज़ वो
है सबसे अलग निराली वो
आसमा को छूने की चाहत उसकी
हर अंदाज हर काम में है सबसे हटके
बचपन से ही डॉक्टर बनने के सपने ले वो बड़ी हुई
पापा की नानू जाने कब बड़ी हो गई
पापा की राजदुलारी भैया की वो प्यारी है
माँ की आँखों का तू तारा सबके प्राणों से प्यारी है
पापा की लाड़ली इतनी कि चाँद तारे माँगे तो
आसमा से ले आएँ उसके पापा
बस दुआ है इतनी मेरी नन्हीं परी की
ख़्वाहिश सदा हो पूरी सदा रहे
वो हँसती मुस्कुराती आसमा को छूने की
ख़्वाहिश हो पूरी उसकी..

''गगन''

याद आते है वो बचपन के दिन
जब हम आम और अमरुद के पेड़ पर
चढ़ उन्हें खाया करते थे
आज भी याद है
वो गरमी की रातें
जब खुले आसमा तले बिस्तर डाल
हम सोया करते थे
आज इनकी जगह गगन चुंबी
इमारतों ने ले ली है
जहाँ देखो वहाँ
सिर्फ़ बड़ी-बड़ी इमारतें ही नज़र आती है
वो भी क्या दिन थे
जब हम खुले आसमा तले
खेला करते थे
आम और जामुन के वृक्षों में,
झूला डाल झूला करते थे
पर अब दूर तक
सिर्फ़ गगन चुंबी इमारतें ही नज़र आती है
वो सारी यादें
अब सिर्फ़ एक कहानी ही रह गई
अब न वो अमराई है न खुला आसमा
अब है तो सिर्फ
गगन चुंबी इमारतें...

''कभी कहा था तुमने''

ये अश्क न गिरने देना
ज़मीं पे तुम
लिए थे वादे कभी
हमसे तुमने
कहा था कभी तुमने
कि
तेरे ये अश्क नहीं
बड़े ही कीमती मोती है
संभालकर रखना इन्हें
गिरने न देना ज़मीं पर इन्हें
कहा था तुमने तेरे अश्क
न गिरने दूँगा कभी
दूँगा खुशियाँ इतनी
कि बह न पाऐंगे तेरे ये अश्क
इन अश्कों के बहने से पहले ही
अकार थाम लूँगा
तुझे इन अश्कों को बहाने न दूँगा
कभी कहा था तुमने...

''बेबसी''

कभी सोचा है उन सड़क के किनारे
जामुन और आम की थैलियाँ लिए बच्चों के बारे में
कभी सोचा है सड़क किनारे
धनिया और मिर्ची का ढेर लगाए बैठी
बूढ़ी काकी के बारे में
कभी सोचा नहीं हमने उनकी बेबसी के आलम को
किया तो सिर्फ़ हमेशा मोलभाव

कभी सोचा ही नहीं हमने हजारों ख़र्च करते होटलों में
नहीं करते मोलभाव बड़ी दुकानों में

धूप की तपन को सहते
इन बेबस ग़रीबों से फिर क्यों दस की चीज़
माँगते हम पाँच में
क्यों करते हैं मोलभाव हम...

''विवशता''

क्यूँ ज़िंदगी मुझे यूँ मौत के
करीब हर बार ले जाती है

क्यूँ इतना डराती है तड़पाती है
जीने नहीं देती चैन से कभी

क्यूँ हर वक़्त ख़ौफ़ में जीती हूँ मैं
अमन और शांति मुझे मिलती नहीं

क्यूँ न जी पाती हूँ मैं बेफिक्र सी ज़िंदगी
डरी सहमी सी हर वक़्त रहती हूँ

क्यूँ हर वक़्त मौत से लड़ जी उठती हूँ
फ़िर भी मौत को सामने पा सिहर उठती हूँ

क्यूँ ये ज़िंदगी लगती दुश्वार है जबकि
जानती हूँ जीना है अभी बच्चों के लिए

क्यूँ मुझे भगवान ऐसे दो राहे पे खड़ा करता है
मौत का सामना करा ज़िंदगी दे देता है

आख़िर कब तक चलेगा ये बेबसी सिलसिला
कब तक कर पाऊँगी इंस कर इसका सामना

क्यूँ क्यूँ क्यूँ क्यूँ
थक चुकी हूँ अब इनका जवाब ढूँढते ढूँढते
अब तो बस थोड़ा सुकून चाहिए

विवशता तो देखो मेरी चाह कर भी
शांति और चैन से मैं जी नहीं पाती
क्यूँ...

''नाराज़गी''

ये कैसी नाराज़गी है हमारी
जो हमें दूर करने के बजाए
और करीब ले आती है
हमारे रिश्ते को और मजबूत बनाती है

हम नाराज़ तो होते है पर दो पल के लिए
एक दूसरे से बिना बोले हम रह ही नहीं सकते
कैसा अजीब रिश्ता है न हमारा
तकरार तो होती है पर प्यार में

जिंदगी का मज़ा ही नोक झोंक में है
जहाँ तकरार होगी प्यार उतना ही गहरा होगा
क्योकि जहाँ तकरार वहाँ प्यार
हम नाराज़ भी उसी से होते है
जिससे हम सबसे ज्यादा प्यार करते है.............

"वृंदावन का कृष्ण कन्हाई"

वृंदावन का कृषण कन्हाई
बस गया मेरे अंतर्मन में
छैल छबीला नंदलाल
बस गया मेरे अंतर्मन में

मुरली की मधुर तान सुना
मोहे वो सब के तन मन को
चुपके चुपके माखन खाए
रोक न पाए गोप ग्वाल सब

बरसाने की राधा संग जब
वृंदावन में रास रचाए
देखत रह जाए सब
शिश शंभु भी रुक न पाए

मथुरा में जाके कंस मारे
कब्जा के भी भाग सँवारे
गोकुल में कालिया नाग वो मारे
गिरिराज में जाए गवोवर्धन उठाए

वृंदावन का कृष्ण कन्हाई
बस गया मेरे अंतर्मन में
छैल छबीला नंदलाल
बस गया मेरे अंतर्मन में...

''हमारी शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ''

जाने कब ये 25 बरस बीत गए
तुम्हारे प्यार की छांव में
पता ही नहीं चला ऐसा लगता है
मानो कल ही की तो बात है
जब मैं तुम्हारें घर दुल्हन बन आई थी
वो मेंहदी लगे हाथ पैरों में हमावर
लगा किया था तुम्हारे अँग़ना गृहप्रवेश था
आया नन्हा सा मेहमान जब हमारे
घर था छाई खुशियाँ अपार थी
पर शायद क़िस्मत को मंजूर
न थी ये ख़ुशियाँ हमारी
छा गया एक गाना अंधियारा था
फिर आया नन्हा सा बेटा कार्तिक था
खुशियों से भरा जीवन अब हमारा था
घर आई फिर एक नन्ही परी कावेरी थी
बगिया सजी तब हमारी थी
ख़ुशियों से भरा फूलों से महकता रोशन होता,
जाने कब ये पच्चीस बरस बीत गए
तुम्हारे प्यार की छांव में
पता ही नहीं चला ऐसा लगता है
मानो कल ही की तो बात है
जब मैं तुम्हारें घर दुल्हन बन आई थी

वो मेंहदी लगे हाथ पैरों में हमावर
लगा किया था तुम्हारे अँगना गृहप्रवेश था
आया नन्हा सा मेहमान जब हमारे
घर था छाई खुशियाँ अपार थी
पर शायद क़िस्मत को मंजूर
न थी ये ख़ुशियाँ हमारी
छा गया एक गाना अंधियारा था
फिर आया नन्हा सा बेटा कार्तिक था
खुशियों से भरा जीवन अब हमारा था
घर आई फिर एक नन्ही परी कावेरी थी
बगिया सजी तब हमारी थी
ख़ुशियों से भरा फूलों से महकता रोशन होता

''हासिल''

कुछ किया हासिल अभी
कुछ है करना अभी बाकी
जिंदगी में आएँगे और भी मौके
ऐसे कई अभी तो
खेल कूद में गँवाया समय
अभी पढ़-लिख नया मुकाम
हासिल करना है बाकी
जिंदगी बहुत लम्बी है यारों अभी
कठिन राहों पे चल
अपनी मंजिल को पाना है बाक़ी
जिंदगी मिली है
कुछ कर है दिखाना अभी बाकी
बेटियों पे होते अत्याचार को
मिटाना है अभी बाकी..
हासिल तभी होगी मंजिल हमें
जब देश से आतंक मिटा
देश को भय मुक्त कर पाए सभी
कुछ किया.....

विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ के उपलक्ष्य में
मम्मी-पापा को
बच्चों द्वारा अनुपम उपहार

संजय ज्वेलर्स
सराफा मार्केट, वारासिवनी (म.प्र.)